हस्तरेखा कुंडली का दर्पण

डॉ. अनूप खरे पी. एच. डी इन एस्ट्रोलॉजी एन्ड पॉमेस्ट्री

Copyright © 2020, Anoop Khare
All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or any information storage and retrieval system now known or to be invented, without permission in writing from the publisher, except by a reviewer who wishes to quote brief passages in connection with a review written for inclusion in a magazine, newspaper or broadcast.

Published in India by Prowess Publishing,
YRK Towers, Thadikara Swamy Koil St, Alandur,
Chennai, Tamil Nadu 600016

ISBN: 978-81-945987-5-6
eISBN: 978-81-945987-6-3

Library of Congress Cataloging in Publication

अनुक्रमणका

प्रथम अध्याय. 1
द्वितीयोऽध्याय 9
तृतीयो अध्याय. 15
चतुर्थो अध्याय 20
पंचमो अध्याय 22
षष्ठोऽध्याय. 24
सप्तमोऽध्याय 31
अष्टमोऽध्याय. 34
नवम अध्याय. 37
दशम अध्याय 39
एकादश अध्यायः. 42

द्वादशोऽध्याय 47
तृयोदशोऽध्याय 51
चतुरदशोऽध्याय. 54
पंचदशोऽध्याय. 58
षष्ठ दशोऽध्याय 60
सप्तादशोऽध्याय 78
अष्टादशोऽध्याय. 81
नवम्शोऽध्यायः विज्ञान और आलोचना. 84
विन्शोऽध्याय 86
उपसंहार. 130

प्रथम अध्याय

प्रस्तावना

हस्तरेखा सामुद्रिक शास्त्र

यह एक अत्यन्त प्राचीन विद्या है यह भारतीय ज्योतिष विद्या में नक्षत्र तारो की गणना के आने से पूर्व से प्रचलित है भारतीय ऋषी मनीषी एवं आयुर्वेदज्ञ हमेशा ही हस्त परीक्षण द्वारा मनुष्य के स्वभाव एवं घट रही घटनाओ का हाथ की रेखाओ मे मौजूद परिवरतन या बदलाव से जान जाते थे।

कालान्तर मे यह विज्ञान आयुर्वेद चिकित्सा का महत्वपूर्ण अंग था किस ऋतु मे किस नक्षत्र के उदय होने पर कौन सी औषधी उत्पन्न होती है किस ऋतु मे उसका सेवन रोगी को रोग मुक्त करेगा यह जानकारी वैद्य को होना परम आवश्यक थी अतः ज्योतिष विद्या आयुर्वेद विग्यान का एक अभिन्न अंग थी।

हस्तपरीक्षण नाड़ी परीक्षण एवं स्वर विज्ञान (नासिका से बहने बाली वायू) आदि की जानकारी एक आयुर्वेदाचार्य का होना परम आवश्यक थी।

भारतीय ऋषी मुनियो द्वारा आश्रम शिक्षापद्धती से इस विद्याको पूर्णरूप से विकसित किया एवं घुमक्कड़ जन जातियो एवं ऋषियों द्वारा हस्त ज्योतिष विद्या द्वारा भविष्य कथन की कला के रूप में यह भारतीय विद्या अन्य देंशों मे प्रचलित हो गयी।

आइये आपका भविष्य दर्शन के इस विज्ञान से एक सरलतम परिचय करायें।

इस विषय का पुराणो एवं अन्य भारतीय ग्रन्थो मे बहुत सारगर्भित विवेचना की गई है आइये जाने।

धार्मिक ग्रंथों तथा पुराणों से व्यक्ति के हाथ से उस की प्रकृति, आयु, स्वास्थ्य, संतान तथा अन्य शुभाशुभ फलों के ज्ञान का विस्तार से वर्णन किया गया है।

1. पुरुषों के दायें तथा स्त्रियों के बाएं हाथ से शुभ अथवा अशुभ लक्षणों का विचार करना चाहिए।
2. जो पुरुष बाएं हाथ से ही सभी कार्य करते हैं उनके बाएं हाथ से ही विचार करना चाहिए।
3. कुछ ग्रंथों के मत से पुरुषों का बायाँ तथा स्त्रियों का दायाँ हाथ जन्मजात गुण-अवगुणों को अभिव्यक्त करता है। अतः दोनों हाथों का तुलनात्मक परीक्षण करना चाहिए।

हस्त रेखाओ का सामान्य परिचय

प्राथमिक तौर पर हम 'हस्तरेखा विज्ञान' अर्थात् पॉमस्ट्री को दो भागो में बांट सकते है।

1-हस्त रचना: इसमें हम व्यक्ति की मूल प्रवृत्तियों का ज्ञान करते हैं। जैसे-प्यास, भूख, क्रोध, भय, काम आदि इच्छाएं, हस्त लक्षण विद्या के नाम से जानते हैं।

2-हस्त रेखा: हाथकी उंगलियों को क्रमशः अगूठा, तर्जनी, मध्यमा अनामिका एवं कनिष्ठिका के नाम से जाना जाता है।

हथेली पर अनेको रेखायें होती है उनमे जो सभी हाथो मे मुख्य रूप से पायी जाती है उन्हे मुख्य रेखाये कहते है जो रेखाएं कुछ कुछ हाथो मे होती है उन्हे गौण रेखाए कहते है। हाथो मे बहुतसी रेखाएं ऐसी होती है जिनके नाम नही होते उन्हे प्रभाव रेखाए कहते है ये रेखाएं जिन पर्वतो से निकलती है एवं जिस पर्वत पर पहुंचती है उसी पर्वत के स्वामी गृह से प्रभावित होती है।

इन रेखाओ पर स्टार द्वीप क्रास वृत्त आदी चिन्ह होते है जो भविष्य की महत्व पूर्ण घटनाओ की ओर इंगित करते है।

आपकी हथेली के कुछ भाग उभरे हुए होते हैं तो कुछ चपटे। कुछ भाग धंसा हुआ होता है। हथेली में उभरे, चपटे और धंसे हुए यही क्षेत्र पर्वत कहलाते हैं। हस्त रेखामें यह पर्वत आपके भविष्य के बारे में बहुत कुछ कहते हैं। प्रत्येक उंगली के नीचे बने इन पर्वतों से आपकी पूरा व्यक्तित्व झलकता है। हथेली में ये उभार नौ क्षेत्रों में होते हैं। हथेली में पर्वत का लुप्त होना संबंधित ग्रह के गुणों की कमी को दर्शाता है जब कि अति उभार उसके च्यादा गुण बताता है। हालांकि कभी-कभी च्यादा उभार गुण के बजाय अवगुण में भी बदल जाते हैं। सभी पर्वतों के नाम उनके ग्रहों के नाम पर ही होते हैं। आइए आप भी जानिए क्या कहते हैं हथेली के ये पर्वत। तर्जनी के नीचे गुरु का पर्वत होता है। यह पर्वत विद्या, बुद्धि, धर्म-कर्म एवं लेखनशक्ति को दर्शाता है।

मध्यमा के नीचे शनि का पर्वत होता है। यह पर्वत व्यक्ति की गंभीरता, ज्ञान, उदासीनता, आधायत्म वाद, वैराग्य, भाग्य और अंध विश्वास के बारे में बताता है। यदि शनि पर्वत सपाट है तो यह व्यक्ति की संतुलन की अवस्था को दर्शाता है।

अनामिका के नीचे सूर्य पर्वत होता है। यह पर्वत व्यक्ति की कला के प्रति रूचि, उसका उत्साह, उसकी प्रसन्नता और सफलता के बारे में संकेत करता है।

कनिष्ठ के नीचे बुध पर्वत होता है। बुध पर्वत व्यक्ति के व्यापार के गुण, शिल्पकला, चतुराई, चंचलता और गणित-विज्ञान के बारे में बताता है।

अंगूठे के नीचे शुक्र पर्वत होता है। यह पर्वत गृहस्थ प्रेम, वासना, सुख, ऐश्वर्य एवं सुंदरता की सूचना देता है।

अंगूठे के विपरीत या शुक्र के विपरीत चंद्र पर्वत होता है। चंद्र पर्वत कल्पना, स्वार्थ, कला, संस्कृति, कोमलभावनाएं और भावी सामुद्रिक यात्राओं की राह दिखाता है।

गुरू और शुक्र पर्वत के बीच में आक्रामक मंगल होता है। इसे निम्न मंगल के नाम से भी जाना जाता है। यह पर्वत व्यक्ति के साहस, बदला लेने की प्रवृत्ति और झगड़ालू स्वभाव को बताता है।

बुध एवं चंद्र के बीच में रक्षात्मक मंगल या उच्च मंगल पर्वत होता है।

इन पर्वतों के अलावा हथेली में क्रास, वर्ग, नक्षत्र एवं जाली के आकार की भी रचनाएं होती हैं। ये रचनाएं भी जीवन से जुड़ी कई घटनाओं की तरफ इशारा करती हैं। कुल मिला कर हस्त रेखाओं के साथ पर्वत और क्रास भी व्यक्ति के जीवन के बारे में बहुत कुछ बताते हैं।

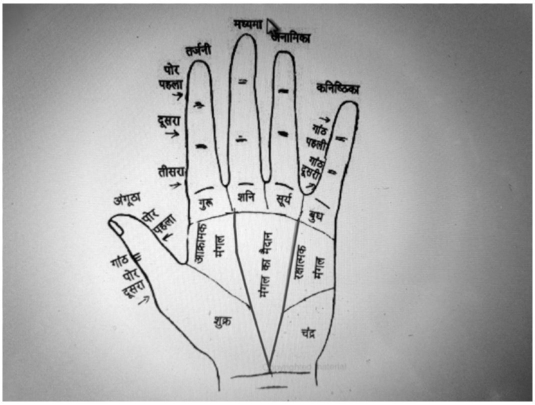

सामुद्रिक ग्रंथों तथा पुराणों में वर्णित
हस्त परीक्षा से सम्बंधित मुख्य सूत्रों का वर्णन

जिसमें हमें मनुष्य का भूत, वर्तमान और भविष्य का ज्ञान होता है। इसे हस्तरेखा विद्या कहते हैं।

दोनों विद्याओं का सम्मिलित नाम हस्तरेखा विज्ञान है। इस 'पॉमस्ट्री' को प्राचीन काल में, 'सामुद्रिक शास्त्र' के अंतर्गत लिया जाता था। इस शास्र का एक अध्याय या भाग 'हस्त सामुद्रिक' है। हथेली हमारे मन-मस्तिष्क का दर्पण है। इस पर बने उभार को पर्वत कहाजाता है। ये पर्वत हमारे मस्तिष्क के कुछ केंन्द्रो की

क्रियाशीलता की ओर संकेत करते हैं। हाथ पर फैली रेखायें हमारे अचेतन की तरंगों के मार्ग हैं। हाथ की तीन मुख्य रेखायें-हृदय।

रेखा, मस्तिष्क रेखा तथा जीवन रेखा की रचना गर्भावस्था के तीसरे तथा चौथे मास के दौरान बनती है। हमारे अचेतन मन की इच्छाएं हमारे भविष्य की नींव हैं, ये ही हस्तरेखाओं के रूप में प्रकट होती हैं। अचेतन मन (हस्तरेखा) को पढ़ना ही भविष्य को पढ़ना है। हस्तरेखा हथेली पर बने मन के ग्राफ हैं। अचेतन मन की इच्छाओं का ग्राफ हथेली पर बनता है। पॉमस्ट्री मनोविज्ञान के अधिक निकट है।

यह सत्य है कि रेखायें बदलती रहती हैं परंतु धीमी गति से। यह भी सत्य है कि अंगुलियों के निशान कभी नहीं बदलते। आज हम अपने दोनों हथेलियों की छाप लेकर रखें किर कुछ समय बाद जब हमारी स्थिती (हालात) बदलजाये, तब पुनः छाप निकलवायें तो पिछले तथा नएछाप में तुलनात्मक अध्ययन करें तो पायेंगे कि बहुत-सी रेखायें बदल चुकी हैं। हमारे सोचने अथवा विचारों का प्रभाव हाथ की रेखा पर भी पड़ता है। हृदय का हाल 'हृदय रेखा' तथा 'मस्तिष्क' का हाल मस्तिष्क रेखा' पर स्पष्ट रूप से देखाजा सकता है। बायां हाथ पूर्व कमों का तथा दायां हाथ हमारे भविष्य तथा वर्तमान के कर्मों का द्योतक है। मनुष्य के कर्मानुसाररेखायें भी बदलती हैं। सिद्धान्त एवं नियम के अनुसार पुरूष का दायां व स्त्री तथा बालक का बायां हाथ प्रमुख रूप से देखना चाहिये। निष्क्रिय पुरूष तथा बाएं हाथ से लिखने वाले का बायां हाथ एवं सक्रिय (व्यापार एवं व्यवसाय करने वाली) स्त्री का दायां हाथ देखना चाहिये, क्योंकि दायां हाथ ही कर्मशील हाथ है। दोनों हाथों को देखकर ही फलादेश करना चाहिये यदि एक हाथ में दुर्घटना हो तो वह घटित नहीं होती, यदि हो भी जाए तो रक्षा अवश्य हो जाती है। देश, समय व जाति की भिन्नता से फलादेश में अंतर पड़ जाता है। पंचांगुली देवी, सरस्वती मां अथवा अपने ईष्टदेव का 32 लाख जप करने से ज्योतिषी की वाणी में शक्ति आ जाती है। हाथ का दूर से ही प्रारंभिक अवलोकन करके फिर उसे हाथ में लेकर देखना चाहिए, इससे फल स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। ज्योतिषी को व्यर्थ की बातों का उत्तर नहीं देना चाहिये। याद रखें कि हाथ की कोई भी रेखा बेकार नहीं है, उसका कुछ न कुछ फल अवश्य है। गोधूलि वेला तथा रात्रि में (कम रोशनी) में हाथ की परीक्षा नहीं करनी चाहिये। पहले हाथ की बनावट, अंगुलियां, अंगूठा, पर्वत आदि से व्यक्ति के स्वभाव का पता लगाना चाहिये।

फिर चिह्न व रेखाओं से जीवन की घटनायें देखनी चाहिये। ज्योतिषी तथा व्यक्ति दोनों कठिन श्रम के तुरंत बाद, अत्यधिक गर्मी सर्दी में, नशे की अवस्था में हाथ न देखें और न दिखायें, बाएं हाथ से पत्नी का तथा स्त्री के दाएं हाथ से पति का भविष्य देखना चाहिये। ज्योतिषी को किसी की मृत्यु तथा अशुभ बातें किसी को स्पष्ट रूप से नहीं बतानी चाहिये। कभी भी, भीढ़भाढ़ मे जल्दीबाजी में, क्रोध में, लालच में, मजाक में या तीसरे व्यक्ति की उपस्थिती में फलादेश नहीं करना देखना चाहिये। किसी को निरूत्साहत करने की बात भी नहीं करनी चाहिये। अतः हस्तरेखा का अध्ययन बहुत सूक्ष्मता से, धैर्यपूर्वक, शांतचित्त एवं एकांत में होना चाहिये।

हस्तरेखा शास्त्र या काइरमैन्सी जिसेकेरोमन्सी भी लिखा जाता है, जो यूनानी शब्द चेइर (हाथ) और मंटिया (अनुमान) से बना है, यह हथेली को पढ़कर लक्षण का वर्णन और भविष्य बताने की कला है। इस कला का प्रयोग कई सांस्कृतिक विविधताओं के साथ सम्पूर्ण संसार में देखा जाता है।

हस्तरेखा शास्त्री या काइरमैन्सी। जो हस्तरेखा पढ़ते हैं, उन्हें आम तौर पर हस्तरेखा शास्त्री, हथेली पढ़ने वाला, हाथ पढ़ने वाला, हस्तरेखा व्लिेषक या हस्तरेखा विद्वान।

भी कहा जाता है। हस्तरेखा शास्त्र को आम तौर पर छद्म विज्ञान माना जाता है। नीचे उल्लेखित जानकारी संक्षेप में आधुनिक हस्तरेखा शास्त्र के मुख्य तत्व है, जिनमें से कई र्वभिन्न रेखाओं की व्याख्या अक्सर विरोधाभासी होती है और हस्तरेखाविद् विभिन्न "विद्यालयों" में बंटे होते हैं। हस्तरेखा शास्त्र की जड़ें चीनी वाईजिंग (आईचिंग), भारत में (द हिन्द) ज्योतिष शास्त्र और रोमा (जिप्सी) भविष्यवेत्ता से जुड़ी हुई हैं। मानी जाती है माना जाता है की हिन्दू ऋषी वाल्मीक ने एक पुस्तक भी लिखी, जिसमें 567 श्लोक हैं। भारत से, हस्तरेखा कला का चीन, तिब्बत, मिस्र, फारस और यूरोप के अन्य देशों में प्रसार हुआ। चीन से, हस्तरेखा शास्त्र का यूनान में प्रसार हुआ, जहां अनेक्सागोरस ने इसका प्रयोग किया। लेकिन आधुनिक हस्तरेखा शास्त्री अक्सर भविष्य प्रगट करने वाली इस पारंपरिक तकनीक को मनोविज्ञान, संपूण निदान, अनुमान के वैकल्पिक तरीकों से भी जोड़ते रहे हैं। कैप्टन कासिमिरस्तान नस्लासडी' अरपेंटगनी ने 1839 में ला कैरोगेनोमी का प्रकाशन किया। एड्रियन एडोल्फ डेसबारोलेस ने 1859 में लेस मिस्टेरेसडे ला मेन का प्रकाशन किया।

कैथरीन सेंट-हिल ने 1889 ग्रेट बिटेन में कैरोलॉजिकल सोसाइटी की स्थापना की। एडगरडी-वालकोर्ट-वरमोंट (कॉमटेडी सेंट जर्मेन) ने 1897 में अमेररकन कैरोलॉजिकल सोसाइटी की स्थापना की। काउंटलुईचैलेंज (केरो) ने 1894 में केरोजलैंग्वेज ऑफ हैंड प्रकाशित की। विलियमबेनहाम ने 1900 में लॉज आफ साइंटिफिक हैंडरीडिंग का प्रकाशन किया। कारलोटवोल्फ के 1936–1969 के दौरान किये गये कायों ने वैज्ञानिक हस्तरेखा शास्त्र में योगदान दिया। नोएलैजक्वन 1925–1958 के दौरान किये गये कायों से वैज्ञानिक हस्तरेखा शास्त्र में योगदान भमला। अकसर हम ये बात सुनते हैं कि हमारी किस्मत हमारे अपने ही हाथ में होती है। बात भी सही है क्योंकि हमारे हाथ में भी रेखाएं होती हैं, बहुत हद तक वह हमारी अच्छी या बुरी किस्मत का निर्धारण करती हैं। दरअसल किन ग्रह-नक्षरों में व्यक्ति ने जन्म लिया है, यह बात उसकी पूरे जीवन का निर्धारण करती है, लेकिन वर्तमान में आपके जीवन में क्या चल रहा है, यह सभी आपके हाथ की रेखाओं को देखकर पता चलता है। हस्तरेखा शास्त्र के अनुसार इंसान के हाथ की रेखाएं समय-समय पर बदलती हैं और यह बदलाव वर्तमान हालातों में हो रहे परवर्तनों को दर्शाता है, जिसके आधार पर भविष्य की नींव पड़ती है। हमारे जीवन और हमारे हाथ की रेखाएं, दोनों एक दूसरे से प्रत्यक्ष रुप से संबंधित है। जीवन में होने वाली घटनाओं और हमारे जीवन को जानने-समझने में हमारे हाथ की रेखाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

भूतकाल, वर्तमान और भविष्य में व्यक्त का जीवन किस प्रकार का रहेगा, यह हाथ की रेखाओं से जाना जा सकता है। हम सभी जानते है कि हम सभी के हाथों में अनेक रेखाएं होती हैं, जो जीवन के अलग-अलग विषयों का प्रतनिधित्व करती है। जीवन में किसी व्यक्ति के जीवन में कोई घटना कब घटित होगी और कब नहीं घटित होगी, यह हाथ की रेखाओं के अध्ययन से जाना जा सकता है। हाथ की रेखाओं को जीवन की घटनाओं का मानचित्र कहा जा सकता है। हस्तरेखा शास्त्र में यह माना जाता है कि हथेली में जन्मस्थान पर्वतों का ऊर्जा केंन्द्र मस्तिष्क के केंन्द्रो से जुड़ा होता है। इसलिए व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आर्थिक विषयों को ये ऊर्जा केन्द्र नियंत्रित करते है। हाथ की अंगुलियों के ठीक नीचे स्थित स्थानों को पर्वतों के नाम से जाना जाता है।

ये पर्वत व्यक्ति के मनमस्तिष्क से जुड़े होने के कारण, मस्तिष्क की तरंगे, हथेलियों की रेखाओं और हथेली में स्थित प्रेशरपॉइंट्स के प्रभाव के अनुसार

परिवरितत होते रहते है। हथेली की रेखाओं से जीवन का ग्राफ सही रुप से समझा जा सकता है।। हस्तरेखा शास्त्र यह कहता है कि यदि महलाओं की अंगुलियां छोटी हों तो वो सामान्य से अधिक व्यय करने की आदत वाली होती हैं। यदि दोनों हाथों की अंगुलयों को जोड़े और अंगुलियों के मध्य जगह दिखाई दे रही हो तो इसका अर्थ है कि व्यक्ति बहुत अधिक व्यय करने वाला है। यह योग यदि महलाओं के हाथों में बन रहा हो तो ऐसा मानना चाहिए कि उनका जीवन मुश्कलों भरा होगा। कलाई के निकट आड़ी-तिरछी रेखाएं मणिबंध के नाम से जानी जाती है।

द्वितीयोऽध्याय

मणिबंध

इन रेखाओं का विश्लेषण कर यह जाना जा सकता है कि व्यक्ति के पास धन की स्थिति कैसी रहेगीऔर आने वाले समय में उसका भाग्य कैसा रहेगा। ये रेखाएं व्यक्ति की आयु के बारे में भी बताती है। अलग-अलग व्यक्तियों के हाथ की कलाई में बनने वाली रेखाएं अलग-अलग प्रकार की होती है। हस्तरेखा शास्त्र के अनुसार यदि कलाई में चार मणिबंध रेखाएं हो तो व्यक्ति दीर्घायु वाला होता है, एक अनुमान के अनुसार इस योग के फलस्वरुप व्यक्ति की आयु १०० वर्ष की होती है। कलाई में यदि ३ मणिबंध रेखाएं तो व्यक्ति की आयु १०० वर्ष से कम ७५ वर्ष के आस-पास होती है। दो रेखाएं पचास वर्ष की आयु होने की संभावनाएं बनाती हैं। एक मणणबंध रेखा २५ वर्ष की आयु का संकेत देती है।

हाथ तथा बाजु के जोड़ के स्थान को ही मणिबंध कहा जाता है। हाथ से जिस जगह हथेली जुड़ती है उसे मणिबंध कहा जाता है। आप इसे कलाई भी कह सकते हैं। मणिबंध पर मौजूद रेखाओं को देखकर जातक की आयु ज्ञात की जा सकती है। मूलतः कलाई पर मौजूद तीन ही रेखाएं मणिबंध रेखाएं कहलाती हैं। कुछ लोगों के हाथ में दो मणिबंध रेखाएं होती हैं तो कुछ के हाथ में चार मणिबंध रेखाएं भी होती हैं। ये रेखाएं आयु, स्वास्थ्य, धन, प्रतिष्ठा

एवं सम्मान की सूचक होती हैं। गरुड़ पुराण के अनुसार यदि मणिबंध में हड्डियां दिखाई नहीं देती हैं और कलाई तथा हथेली का जोड़ मजबूत है तो यह सौभाग्य का प्रतीक माना गया है। इसके विपरीत मणिबंध होने पर व्यक्ति को जीवन में कई प्रकार की परेशानियों का सामना करना पड़ता है और दुर्घटना के भी योग बनते हैं।

मणिबंधोऽव्यवच्छिन्नो रेखात्रय विभूषितः।
ददाति न चिरादेव मणिकांचन मण्डनम्।।

भविष्य पुराण के अनुसार जिस स्त्री के मणिबंध पर चारों ओर तीन अखंडित रेखाएं हों वह रत्न आभूषण पहनने वाली सौभाग्यशालिनी होती है।

हाथ की ओर से पहली रेखा पर मध्य में तारे का चिन्ह हो तो विरासत में धन मिलने की संभावना होती है। मणिबंध की पहली रेखा पर गुणा का चिन्ह हो तो जीवन के प्रथम भाग में, दूसरी रेखा पर हो तो मध्य भाग में तथा तीसरी रेखा पर हो तो बुढापे में संघर्ष तथा कष्टों का सामना करना पड़ेगा।

मणिबंध पर कलाई के चारों ओर तीन पूर्ण अखंडित रेखाएं हों तो व्यक्ति दीर्घायु से युक्त तथा महाधनी होता है। ये रेखाएं यवमाला के रूप में हों तो व्यक्ति किसी राज्य का अधिपति होता है। मणिबंध पर ऐसी दो रेखाएं व्यक्ति को राज्य का मंत्री तथा एक रेखा धन-धान्य से परिपूर्ण करती है। अखंडित तथा स्पष्ट रेखाएं पूर्ण शुभ फल प्रदान करती हैं तथा अस्पष्ट तथा खंडित रेखाएं अल्प मात्रा में ही शुभफलदायक होती हैं।

मणिबंध रेखाओं के बारे में यह माना जाता है कि यदि ये रेखाएं गहरी न हों, टूटी-फूटी और छिन्न-भिन्न हों तो व्यक्ति को धन आगमन में परेशानियां आती हैं, उन्नति और सफलता बाधित रहती है। मणिबंध पर बहुत सारी जंजीरदार रेखाओं का होना जीवन में अनेक उलझने होने की संभावनाएं देती है। परन्तु जब रेखाएं साफ-सुथरी और गहरी होती हैं तो व्यक्ति का जीवन सुखमय, बाधारहित और भाग्यशाली रहता है। यहां पर यव चिन्ह का होना भाग्य में बढ़ोतरी करता है। इसके विपरीत यदि यव की जगह यहां पर द्वीप का चिह्न हो तो व्यक्ति को दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ सकता है। मणिबंध रेखाओं का छोर पर जाकर मिलना भाग्य में कमी करता है। यह शारीरिक कष्ट की स्थिति का भी संकेत देता है।

मणिबंध में एक रेखा

यदि किसी व्यक्ति की हथेली के मणिबंध पर सिर्फ एक ही रेखा हो और वह श्रेष्ठ गुणों वाली है तो यह सुख की दृष्टि से शुभ है। यहां शुभ लक्षण का अर्थ है कि मणिबंध की रेखा कलाई के चारों ओर हो और उसमें जौ के आकार के यव की लड़ियां हों और रेखा टूटी हुई ना हो तो व्यक्ति कम उम्र में ही कई उल्लेखनीय कार्य करता है। धन संबंधी सुख भी प्राप्त होते हैं।

मणिबंध पर एक ही रेखा हो तो उम्र के लिहाज़ से अच्छी नहीं मानी जाती है। यदि मणिबंध पर एक रेखा हो और हथेली में कोई शुभ लक्षण ना हो तो व्यक्ति अल्पायु हो सकता है। यदि व्यक्ति के हाथ में एक मणिबंध रेखा है तो वह 25 वर्ष की आयु को दर्शाती है।

मणिबंध की दो रेखाएं

यदि किसी व्यक्ति की हथेली में मणिबंध पर दो रेखाएं हों, वे टूटी हुई ना हों, जौ के आकार के यव वाली लड़ियां हों, कलाई के चारों ओर हों तो यह शुभ लक्षण होता है। ऐसे व्यक्ति के जीवन में सभी सुख-सुविधाएं रहती हैं।

यदि किसी व्यक्ति की हथेली में मणिबंध की दो रेखाएं हैं और यहां बताए गए शुभ लक्षण नहीं हैं तो वे रेखाएं बताती हैं कि व्यक्ति को जीवन में कठिन परिश्रम करना होगा।

मणिबंध में दो रेखाएं शुभ लक्षण वाली हो तो उम्र करीब 45 से 55 वर्ष तक हो सकती है। जबकि इन दो रेखाओं पर अशुभ लक्षण होने से उम्र में कमी आने की संभावनाएं रहती है।

यदि मणिबंध में तीन रेखाएं

यदि किसी व्यक्ति की हथेली के मणिबंध पर तीन रेखाएं हों और वे रेखाएं कहीं से टूटी हुई ना हो और कलाई के चारों ओर हों, रेखाओं में जौ के आकार की लड़ियां बनी दिखाई देती हों तो ऐसी रेखाएं व्यक्ति को भाग्यशाली बनाती हैं। ऐसा मणिबंध होने पर व्यक्ति सभी प्रकार के सुख प्राप्त करता है। ध्यान रखें यदि मणिबंध में तीन रेखाएं हों और वे टूटी हुई दिखाई देती हैं तो यह अशुभ लक्षण होता है। ऐसी रेखाएं जिन लोगों के हाथ में होती हैं, वे कड़ी मेहनत के

बाद ही कुछ सफलता या सकारात्मक फल प्राप्त कर पाते हैं। इनके जीवन में संघर्ष अधिक होता है। उम्र करीब 75 से 80 वर्ष तक हो सकती है।

अगर ये रेखाएं 4 हैं तो जातक बेहद सफल, संपन्न और दीर्घायु होता है। मणिबंध रेखा जंजीरदार हो तो उसके जीवन में बराबर बाधाएं आती रहती है।

मणिबंध रेखा पर बिंदु हों तो जीवनभर पेट के रोगों से परेशान रहती है वही इस रेखा पर स्वस्तिक का चिन्ह सौभाग्य का सूचक है द्वीप का चिन्ह मणिबंध पर हो तो उसे बार-बार दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ता है।

इस रेखा पर स्वास्तिक का चिन्ह सौभाग्य का सूचक है द्वीप का चिन्ह मणिबंध पर हो तो उसे बार-बार दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ता है मणिबंध रेखा गहरी, लाल और स्पष्ट हो तो व्यक्ति की सर्वत्र और स्पष्ट हो तो व्यक्ति की सर्वत्र रक्षा होती है संकटों से बचाव होता है।

यदि दो मणिबंध रेखाएं आपस में मिल जाती हों तो दुर्घटना में में अंग-भंग होने का योग बनता है इन रेखाओं का रंग नीलापन लिए हुए हो तो व्यक्ति रोगी होता है पीली मणिबंध रेखाएं विश्वासघात की सूचक है।

यदि मणिबंध में तीन रेखाएं हों तो

यदि किसी व्यक्ति की हथेली के मणिबंध पर तीन रेखाएं हों और वे रेखाएं कहीं से टूटी हुई ना हो और कलाई के चारों ओर हों, रेखाओं में जौ के आकार की लड़ियां बनी दिखाई देती हों तो ऐसी रेखाएं व्यक्ति को भाग्यशाली बनाती हैं। ऐसा मणिबंध होने पर व्यक्ति सभी प्रकार के सुख प्राप्त करता है। ध्यान रखें यदि मणिबंध में तीन रेखाएं हों और वे टूटी हुई दिखाई देती हैं तो यह अशुभ लक्षण होता है। ऐसी रेखाएं जिन लोगों के हाथ में होती हैं, वे कड़ी मेहनत के बाद ही कुछ सफलता या सकारात्मक फल प्राप्त कर पाते हैं। इनके जीवन में संघर्ष अधिक होता है। मणिबंध में तीन रेखाएं शुभ लक्षण वाली हों तो व्यक्ति की उम्र करीब 70 से 85 वर्ष तक की हो सकती है।

विदेश यात्राएं

मणिबंध से यदि कोई रेखा निकलकर ऊपर की ओर जाती हो तो उसके सोचे सभी कार्य उसके जीवनकाल में पूर्ण हो जाते हैं। यदि मणिबंध से कोई रेखा

निकलकर चंद्र पर्वत की ओर जा रही हो तो वह व्यक्ति कई बार विदेश यात्राएं करता है। मणिबंध रेखाएं निर्दोष तथा स्पष्ट हों यदि मणिबंध रेखाएं टूटी हुई या कटी-फटी हो तो उस व्यक्ति के जीवन में लगातार बाधाएं और परेशानियां आती रहती हैं। उसका जीवन संकट और संघर्षों से घिरा रहता है। यदि मणिबंध रेखाएं निर्दोष तथा स्पष्ट हों तो व्यक्ति का प्रबल भाग्योदय होता है। मणिबंध रेखा जंजीरदार हो तो उसके जीवन में बराबर बाधाएं आती रहती हैं। इस रेखा पर स्वस्तिक का चिन्ह सौभाग्य का सूचक है। मणिबंध रेखा पर बिंदु हों तो जीवनभर पेट के रोगों से परेशान रहता है।

दुर्घटना आकाल मृत्यू योग जाने मणिबंध एवं कुंडली से

बृहत पाराशर होरा शस्त्र में महर्षि पराशर कहते हैं "बालारिष्ट योगारिष्टमल्पध्यंच दिर्घकम। दिव्यं चैवामितं चैवं सत्पाधायुः प्रकीर्तितम्"॥

अर्थात आयु का सटीक ज्ञान तो देवों के लिए भी दुर्लभ है फिर भी बालारिष्ट, योगारिष्ट, अल्प, मध्य, दीर्घ, दिव्य व अस्मित ये सात प्रकार की आयु होती हैं। इसके अलावा लग्नेश, राशीश, अष्टमेश व चंद्र नीच, शत्रु राशि के हों व 6, 8, 12 भाव आदि में चले जाएं। चंद्र नीच के अलावा अमावस्या युक्त हो तथा इन पर राहु, केतु का प्रभाव हो तो भी मारक योग बन जाता है, जो कि मृत्यु का कारण बनते हैं।

मणिबंध रेखा गहरी, लाल और स्पष्ट हो द्वीप का चिन्ह मणिबंध पर हो तो उसे बार-बार दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ता है। मणिबंध रेखा गहरी, लाल और स्पष्ट हो तो व्यक्ति की सर्वत्र रक्षा होती है। संकटों से बचाव होता है। यदि दो मणिबंध रेखाएं आपस में मिल जाती हों तो दुर्घटना में अंग-भंग होने का योग बनता है। इन रेखाओं का रंग नीलापन लिए हुए हो तो व्यक्ति रोगी होता है। पीली मणिबंध रेखाएं विश्वासघात की सूचक है।

मणिबंध रेखाओ से जाने भविष्य एवं जीवन के कई महत्वपूर्ण पहलू

जिस जगह पर हथेली और हाथ जुड़ते हैं, उसे कलाई कहते हैं। कलाई पर कुछ लाइनें बनती हैं, इन्हीं लाइन्स को मणिबंध या ब्रेसलेट लाइन्स कहते हैं। ये रेखाएं आयु और जीवन यात्रा के बारे में बहुत कुछ बताती हैं चिकित्सा विज्ञान भी आज तक कोई ऐसी तकनीक नहीं बना पाया है जिससे व्यक्ति की कुल आयु पता

की जा सके। लेकिन भारतीय ऋषि मुनियों को इस बात का पूर्ण ज्ञान था और वे किसी भी जातक को देखते ही उसकी आयु का पता लगा लेते थे। संसार के प्रत्येक व्यक्ति के मन में कभी न कभी यह विचार आता ही है कि आखिर उसकी आयु कितनी है। वह कितने समय तक जीवित रहेगा। वह सोचता है कि काश यह पता चल जाए कि कितनी उम्र तक संसार में रहना है तो वह उसके अनुसार अपने भविष्य की योजनाओं का निर्धारण कर सके।

वर्तमान दौर में किसी भी आयुवर्ग के व्यक्ति को असफलता सहज स्वीकार्य नहीं होती। किंतु यह स्थिति, किशोरावस्था व युवावस्था में बेहद संवेदनशील होती है। जब किसी युवा को लगने लगता है कि वह अपने अभिभावकों के स्वप्न को साकार नहीं कर पाएगा तो वह नकारात्मक सोच में डूब जाता है और इस तरह की परिस्थिति उसे कहीं न कहीं उसे आत्महत्या के लिए विवश करती है। दरअसल आधुनिक समाज में धर्म एवं धार्मिक भावना कम हो रही है। ऐसे में आत्महत्या जैसी बुराई के निवारण के लिए आवश्यक है कि ईश्वर भक्ति, योगा, चिंतन, मनन जैसे क्रियाकलाप रोज किए जाएं। ऐसा करने से आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा और आत्महत्या जैसे बुरे विचार आपके मस्तिष्क को छू भी नहीं पाएंगे।

You've Just Finished your Free Sample

Enjoyed the preview?

Buy: https://store.prowesspub.com